दिनांक :- 09-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दस

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- डॉ० सनयात सेन

कुओमिनतांग दल का संगठन :- डॉ० सनयात सेन ने कुओमिनतांग दल का संगठन किया। चीनी भाषा में कुओ का अर्थ देश, मिन का अर्थ जनता और दल का अर्थ दल होता है। अतः यह सही अर्थ में देश की जनता का दल था। प्रारंभ में इसका न कोई निश्चित कार्यालय था और न कर्मचारी ही। साथ ही दल के

सदस्य केवल वे लोग ही बन सकते थे जो डॉ० सेन के समर्थक थे। अतः प्रारंभ में यह दल के सदस्य सम्पूर्ण चीनी जनता का दल नहीं था दक्षिण चीन के अनेक लोग इससे बाहर थे और कुछ लोग तो इस का विरोध भी करते थे। अतः डॉ० सेन ने इसे राष्ट्रीय दल बनाने का प्रयास किया।

डॉ० सेन ने रूस साम्यवादी दल के आधार पर अपने कुओमिंनतांग दल का संगठन करना चाहा। प्रारंभ में वे ऐसा करना नहीं चाहते थे क्योंकि उन्हें भय था कि रूस से सम्पर्क कायम हो जाने पर चीन में भी साम्यवादियों का प्रभाव कायम हो सकता है। लेकिन सुदूर पूर्वी देशों के सोवियत दूत जोफे के समझाने बुझाने पर डॉ० सेन ने उसकी सहायता से कुओमिन तांग दल संगठन करने के लिए एक घोषणा जारी की।

1923 में उन्होंने रूस के माइकेल बोरोडिन को कुओ
मिनतांग का संगठन करने के लिए आमंत्रित किया।
सितम्बर, 1923 में बोरोडिन कैन्टन पहुंच गया। वह
कुओमिनतांग को व्यापक बनाना चाहता था। जिसके
सदस्य प्रशिक्षित हो और सर्वसाधारण को दृष्टि में रख
कर काम करें, न कि डॉ० सेन के व्यक्तित्व से चिपके
रहें। अतः दल के अनेक शाखाएं चीन के विभिन्न भागों
में खोली गई। दल के नियमों को मानने के लिए स्था
नीय सदस्यों को एक प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करना
पड़ता था। स्थानीय शाखाओं के प्रधान का संचालन स्था
नीय सदस्य ही करते थे। इन शाखाओं (committees)
के आय-व्यय पर निगरानी रखी जाती थी। स्थानीय
शाखाओं की बैठक प्रत्येक पन्द्रह दिनों पर होती थी
जिसमें दल के संगठन, शिष्टाचार और प्रचारक के

Scanned with CamScanner

प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया जाता था। स्थानीय क्षेत्रों में दल की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए निरीक्षण समितियों (Supervisory Committees) की स्थापना की गई। इनका काम सदस्यों को शिष्ट बनाना, आय व्यय देखना, दल के नियमों को कोई भंग न करे आदि थे। स्थानीय शाखाओं के ऊपर तहसील समितियाँ, इसके ऊपर जिला समिति एवं इसके ऊपर प्रांतीय समितियाँ थीं। इस सबों के ऊपर अस्थायी चीन कुओमिनतांग की सारी समितियाँ कार्य करती थीं राष्ट्रीय कॉंग्रेस था इसके अधीन ही कुओमिनतांग की सारी समितियाँ कार्य करती थीं। राष्ट्रीय कॉंग्रेस के सदस्यों का चुनाव प्रान्तीय समितियाँ करती थीं। केन्द्र में एक केन्द्रीय कार्यकारी समिति (Central Executive Committee) और निरीक्षण

समिति (Supervisory Committee) थी। इस तरह इस का संगठन पिरामिड की तरह था। दल के लिए एक विधान का भी निर्माण किया गया। जिसमें डॉ० सेन को दल का आजीवन अध्यक्ष बनाया गया। दल के सदस्य डॉ० सेन के निर्देशन में काम करते थे। 28 जनवरी 1924 को दल की पहली बैठक हुई। इसमें बोरोडिन ने कहा, दल का पुनर्गठन अभी भी शेष है और इसके लिए डॉ० सेन के कर्मठ निर्देशन की आवश्यकता है। चीन की आम जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए वर्ष में एक बार राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन बुलाना आवश्यक कर दिया गया।

कुओमिन्ताँग दल के सिद्धांत

कुओमिनताँग दल के सिद्धांत या डॉ० सेन के सिद्धांत दोनों एक ही है। डॉ० सेन कुओमिनताँग दल के निम्नलिखित तीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया।

Scanned with CamScanner

① राष्ट्रीयता का सिद्धांत (Principle of Nationality)

राष्ट्रीयता कुओमिंतांग दल का प्रथम सिद्धांत था। राष्ट्रीयता से यह संगठित राष्ट्रीय एकता का संकेत मिलता है। जहां तक चीन के लोगों का प्रश्न है, सांस्कृतिक एकता तो उन्हें विरासत के रूप में मिली हुई थी, लेकिन उनमें राष्ट्रीयता एकता की भावना सर्वथा अभाव था। डॉ० सेन इसी अभाव की पूर्ति करना चाहते थे। उन्होंने चीनियों की तुलना बालू की पत्त से करते थे। जिस प्रकार बालू के सभी कण समान होने के बावजूद भी उसकी पत्त तब तक मजबूत नहीं हो सकती जब तक कि सीमेंट के व्यवहार से उस के कणको जोड़ नहिया जाए। इतिहासकार आर० आर० पामर के शब्दों में "चीन के लोग बालू के कण की तरह थे। जब उन्हें अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता त्याग

कर चट्टान की तरह एक हो जाना है। यह एकता सीमेंट रूपी राष्ट्रीयता है जो बालू के कणों को एक में जोड़ता है। चीन में सांस्कृतिक एकता और और समानता होने के बावजूद भी उसकी परख तब तक मजबूत नहीं हो सकती जब तक राष्ट्रीयता थी जो चीन के सांस्कृतिक समाज को सत्ता-वृद्धि के साथ राजनीतिक समाज में परिवर्तित कर सकता था।

बुनियादी तौर पर डॉ० सेन की राष्ट्रीयता का स्वरूप विदेशी-विरोधी (anti-foreign) नहीं था। इसका मुख्य स्वरूप यही था कि लोग अपने कबीले या गाँव के प्रति जो भक्ति भाव रखते हैं, उसे वहाँ से हटाकर राष्ट्र के प्रति भक्तिभाव प्रदर्शित करे। इसलिए डॉ० सेन का कहना था कि राष्ट्रीयता का अर्थ देशभक्ति का विकास है।